अनुवाद
Anuvad

जनवरी-मार्च 2014
अंक : 158

भारतीय अनुवाद परिषद
Translators' Association of India

विषय क्रम

बाजारवादी व्यवस्था में अनुवाद / संपादकीय – (v)

भाषाविज्ञान और अनुवाद / प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी – 1

अनुवाद-औचित्य और अनुवादक / डॉ. सुरेश सिंहल – 13

On Translator's Notes and Prefaces / **Dr. Asim Siddiqui** – 16

बिन अनुवाद सब सून / संतोष खन्ना – 21

शब्द संपदा और अनुवाद / डॉ. पूरनचंद टंडन – 28

जॉर्ज स्टीनर की 'हरम्युनिटिक मोशन' की अवधारणा / रेखा श्रीवास्तव – 33

भाषिक भूमंडलीकरण में अनुवाद की उपादेयता / ओमप्रकाश प्रजापति – 36

बाजारवाद, हिंदी और अनुवाद / डॉ. श्रीनारायण समीर – 39

अनुवाद : भारतीय पार्श्व में / डॉ. एच. बालसुब्रह्मण्यम – 50

अनूदित पाठों का शिक्षण : कुछ विषय-अध्ययन / प्रो. अवधेश कुमार सिंह
(अनु. : डॉ. हरीश कुमार सेठी) – 55

मशीनी अनुवाद : स्थिति एवं संभावनाएँ / डॉ. राकेश शर्मा – 66

संचार-माध्यम, भाषा और अनुवाद / डॉ. जगदीश शर्मा – 71

तेलुगु कथा साहित्य का हिंदी अनुवाद : सांस्कृतिक समस्याएँ /
डॉ. कोम्मिशेट्टि मोहन – 85

मैं उनको अपनी पत्नी नहीं दूँगा (तुर्की कहानी)/ चिलर इल्हान (अनु. : नवेद अकबर) – 90

चाबीवाला / रावूरि भरद्वाज (अनु. : प्रो. एम. शेषारत्नम्) – 91

मगर, कब तक? किसलिए? (पंजाबी कविता) / प्रभजौत कौर
(अनु. : राजकमल चौधरी) – 94

काला आत्मसम्मान (दक्षिण अफ्रीकी कविता) / के. सिसेलिज़
(अनु. : राजकमल चौधरी) – 95

औरत की कविताएँ (मराठी कविता) / किरण येले (अनु. : डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे) – 96

पुस्तक समीक्षा

अनुवाद की अवधारणा का सहज विमर्श / डॉ. कुलभूषण शर्मा – 98

ओमप्रकाश प्रजापति

भाषिक भूमंडलीकरण में अनुवाद की उपादेयता

भूमंडलीकरण एक आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में भौगोलिक दूरी का संकुचन होता है और राष्ट्र-राज्य की सीमा की भावना समाप्त प्रायः हो जाती है। भूमंडलीकरण का संबंध आर्थिक उदारीकरण और निजीकरण से है। भूमंडलीकरण की अवधारणा के संबंध में आर्थिक, राजनीतिक एवं समाजशास्त्रीय पहलुओं पर तो काफी विचार हुआ है, परंतु भाषापरक संदर्भों पर बहुत कम विचार हुआ है। कहा जा सकता है कि भूमंडलीकरण का भाषिक आयाम उपेक्षित-सा रहा है।

भाषिक भूमंडलीकरण शब्द 'भाषिक' और 'भूमंडलीकरण' के योग से बना है। इसमें देखा गया कि भूमंडलीकरण के आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और प्रौद्योगिकीपरक आयामों से कई भाषाई समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं क्योंकि भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में भाषाओं का विशेष महत्त्व रहता है। इस प्रकार, भाषिक भूमंडलीकरण से अभिप्राय आज के विश्व समाज में भाषा की विभिन्न भूमिकाओं का विस्तार है, जो विश्व बाजार की स्थापना के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है और जो वाणिज्यीकरण तथा अंतर्राष्ट्रीयकरण के द्वारा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लेता है। भूमंडलीकरण के द्वारा विश्व ग्राम की जो संकल्पना उद्‌भूत हुई है, उसमें भाषाओं की भी विशिष्ट भूमिका रहती है। इन भाषाओं में से एक भाषा अन्य भाषाओं को पीछे छोड़कर आगे बढ़ जाती है। ऐसी भाषा के विभिन्न आयामों का अध्ययन भाषिक भूमंडलीकरण है।

आज संपूर्ण संसार एक छोटे से गाँव के रूप में बदलता जा रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी की क्रांति ने हमें एक ऐसे मुकाम पर पहुँचा दिया है जहाँ से विश्व के एक कोने से दूसरे कोने में संपर्क साधना अत्यधिक सुगम हो गया है। आज संपूर्ण विश्व में आपसी सहयोग, व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का बड़ी तेजी से विकास हो रहा है। नए-नए शोध एवं ज्ञान का विपुल भंडार आज किसी एक देश तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि यह निरंतर विश्व के कोने-कोने में अनुवाद के माध्यम से पहुँच रहा है। आज व्यापार, पर्यटन उद्योग, चिकित्सा, प्रौद्योगिकी, साहित्य तथा सांस्कृतिक संबंधों में जितनी तेजी से विकास हो रहा है उतनी ही तेजी से अनुवाद की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। भारत जैसे बहुभाषी देश में तो अनुवाद के बिना विकास की बात करना अर्थहीन-सा है। यहाँ के जन-जन तक पहुँचने के लिए अनुवाद की अत्यंत उपादेयता है।

वाणिज्य-व्यापार में अनुवाद : प्राचीनकाल से ही अनुवाद देश-विदेश में वाणिज्य और व्यापार के क्षेत्र में अत्यंत उपयोगी रहा है। प्राचीनकाल से ही भारत, अरब, चीन और यूरोप में व्यापारी लोग अपने व्यापार के लिए देश-विदेश जाया करते थे और अनुवाद के सहारे ही अपना व्यापार और वाणिज्य करते थे। प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी के अनुसार, "स्वतंत्र भारत में वित्त तथा वाणिज्य क्षेत्रों की विभिन्न संस्थाओं का राष्ट्रीयकरण होने से जनता की भाषा में ही जनता के लिए कार्य करने के उपाय खोजे गए, जिनके परिणामस्वरूप मुद्रित फार्मों, चालानों, जमा-रशीदों तथा अन्य प्रलेखों, कागजातों का अंग्रेजी से क्षेत्रीय तथा हिंदी भाषा में अनुवाद की महत्ता को समझते हुए बढ़ावा दिया जाने लगा।" (अनुवाद विज्ञान की भूमिका, पृ. 486) आज भी व्यापारी अपने उत्पादनों और वस्तुओं की गुणवत्ता तथा उनके क्रय-विक्रय के संवर्धन के लिए अनुवाद का ही सहारा लेते हैं। इसके अतिरिक्त, अंतर्राष्ट्रीय बाजार में उत्पादों और माल को खपाने की प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ने के लिए भी अनुवाद का महत्त्व बढ़ जाता है। इस प्रकार भूमंडलीकरण और उदारीकरण से अनुवाद ने अपनी सीमाओं को पार कर विभिन्न कार्यक्षेत्रों में अपनी उपादेयता में वृद्धि कर ली है।

जनसंचार माध्यमों में अनुवाद : संचार माध्यम जीवन की गति को प्रमाणित करने वाले सबसे जीवंत और कारगर साधन हैं। विज्ञान, वाणिज्य, उद्योग, शिक्षा, प्रशासन और आर्थिक गतिविधियों में सर्वत्र ही संचार सक्रिय है। प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी के अनुसार, "देश और काल की दूरियों को समाप्त करते हुए इन संचार माध्यमों ने संपूर्ण विश्व को एक-दूसरे के निकट पहुँचाने का कार्य किया है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न राष्ट्रों के बीच राजनीतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी तथा साहित्यिक और सांस्कृतिक स्तर पर बढ़ते हुए आदान-प्रदान के कारण अनुवाद कार्य की अनिवार्यता और महत्ता की नई चेतना प्रबल रूप से विकसित हुई है। भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में यह कहना उचित ही प्रतीत होता है कि अनुवाद की एक व्यापक तथा एक सीमा तक अनिवार्य और तर्कसंगत स्थिति है।" (अनुवाद विज्ञान की भूमिका, पृ. 59)

संचार माध्यमों की प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की कार्य-प्रणाली में अनुवाद का अपरिहार्य महत्त्व है। दुनिया के कोने-कोने से एकत्र सूचना को पाठकों, श्रोताओं और दर्शकों को उनकी भाषा में पहुँचाने में अनुवाद ही माध्यम बनता है। समाचार एजेंसियाँ कुछ प्रमुख भाषाओं में समाचार प्रस्तुत करती हैं, जिन्हें अखबार, रेडियो तथा टेलीविजन उन्हें अपनी जरूरतों के अनुसार भाषांतरित कराते हैं। समाचारों के अतिरिक्त सूचनाओं, विज्ञापनों, संदेशों आदि के अनुवाद भी किए जाते हैं। भारत जैसे बहुभाषी देश में संचार माध्यमों को विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं में समाचार तथा महत्त्वपूर्ण सूचनाओं का अनुवाद करना पड़ता है। वास्तव में इन माध्यमों का तंत्र काफी हद तक अनुवाद पर आश्रित होता है।

विश्व संस्कृति में अनुवाद : विश्व की सभ्यताओं और संस्कृतियों के विकास में अनुवाद की विशेष भूमिका रही है। उन्हें जानने-समझने के लिए अनुवाद को माध्यम बनाना हमारी नियति है। यूनान, मिस्र, चीन आदि की प्राचीन सभ्यताओं से भारत का घनिष्ठ संबंध रहा

है और इस संबंध में अनुवाद की विशेष महत्ता रही है। बौद्ध धर्म का समूचे एशिया में प्रचार-प्रसार अनुवाद की जीवंत परंपरा का ही परिणाम है। गीता, बाइबिल, कुरान तथा उपनिषद आदि के ज्ञान के अनुवाद से विश्व अत्यधिक लाभान्वित हुआ है। बौद्ध धर्म के माध्यम से भारतीय ग्रंथों का अनुवाद चीनी और अन्य एशियाई भाषाओं में हुआ। पंचतंत्र के लघु संग्रहों का अनुवाद अरबी तथा अन्य यूरोपीय भाषाओं में हुआ। इससे साहित्य और कला की विश्व चेतना का विकास हुआ। विश्व की सांस्कृतिक एकता में इसकी आवश्यकता निश्चित रूप से सिद्ध हो जाती है। मनुष्य ने बहुभाषिक स्थिति में विडंबनाओं से बचने के लिए इसका आविष्कार किया था। अनुवाद के माध्यम से सार्वभौमिक, ऐतिहासिक और सामाजिक एकता के दर्शन होते हैं।

विश्व साहित्य में अनुवाद : भारत की महान परंपराओं एवं अपार ज्ञान राशि का लाभ विश्व ने उठाया है। संस्कृत ग्रंथों और हमारे चिंतन एवं आध्यात्मिक वर्चस्व की विश्व में जो धूम मची है, उसका श्रेय अनुवाद को ही जाता है। आज भी विश्व स्तर पर अपनी उपलब्धियों को बताने के लिए भी अनुवाद एक श्रेष्ठ माध्यम है। अनुवाद से हम विश्व साहित्य से भी परिचित होते हैं। आज भारत विश्व में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, विशेष रूप से दक्षिण एशिया में तो भारत का अत्यंत प्रभाव दिखाई देता है। अतः इस समग्र क्षेत्र में आपसी भाव एवं मैत्री सौहार्द्र को बनाए रखने के लिए अनुवाद एक अनिवार्य आवश्यकता बन गया है।

शिक्षा में अनुवाद : अनुवाद का शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्त्व है। विश्व स्तर पर प्राप्त ज्ञान को शिक्षा में समाहित करना अनुवाद से ही संभव है। हम अपनी शिक्षा व्यवस्था में विश्व स्तर पर हो रहे परिवर्तनों को शामिल करते हुए अपनी शिक्षा व्यवस्था में हो रहे अनुसंधानों को भी जान सकते हैं।

ज्ञान-विज्ञान में अनुवाद : ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद का महत्त्वपूर्ण योगदान मिलता है। ज्ञान के संचार और संरक्षण में यह एक महत्त्वपूर्ण साधन के रूप में उभरा है। आज भूमंडलीकरण के कारण तेजी से बदलते हुए विश्व में प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, कृषि आदि क्षेत्रों में हो रहे नए-नए आविष्कारों और अनुसंधानों से जुड़े रहने के लिए अनुवाद सबसे बड़ा साधन है। "न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत, डॉर्विन के विकासवाद, फ्रॉयड के मनोविश्लेषणवाद और कार्ल मार्क्स के द्वंद्वात्मक भौतिकवाद की जानकारी अनुवाद से ही प्राप्त हुई है और इससे समूचा विश्व प्रभावित हुआ है।" (अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा, डॉ. सुरेश कुमार, पृ. 21) रूसी, जर्मनी, फ्रांसीसी, अंग्रेजी आदि विभिन्न भाषाओं से विज्ञान, कंप्यूटर और प्रौद्योगिकी का विश्व-भर में प्रचार-प्रसार हुआ। इस परमाणु शक्ति के युग में प्रत्येक शक्तिशाली राष्ट्र अन्य राष्ट्रों की सामरिक गतिविधियों पर पूरी-पूरी निगरानी रख सकता है और ऐसी स्थिति में अनुवाद का महत्त्व बढ़ जाता है। वास्तव में विश्व की कम होती दूरियों में अनुवाद की उपयोगिता, प्रासंगिकता और महत्त्व में वृद्धि हो रही है। ❑